के लिए उसे इस परिधि से मुक्त होना है। कृष्णभावना वह पद्धति है जिसके द्वारा जीव भव-परिवेश से मुक्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, दुग्ध-पदार्थों के अतिसेवन से हुई अपच एक अन्य दुग्ध-पदार्थ, दही के सेवन से ठीक हो जाती है। ऐसे ही, विषयासक्त बद्धजीव यहाँ गीता में प्रतिपादित कृष्णभावनामृत-योग के द्वारा भवरोग से मुक्त हो सकता है। साधारणतया इस पद्धति को यज्ञ अर्थात् श्रीविष्णु (श्रीकृष्ण) की प्रसन्नता के लिए कर्म करना कहते हैं। लौकिक कार्यों को जितना अधिक कृष्ण-भावनाभावित होकर, अर्थात् श्रीविष्णु की प्रीति के लिए किया जायगा, पूर्ण तन्मयता के फलस्वरूप पर्यावरण उतना ही अधिक चिन्मय कृष्णभक्तिरस से परिप्लावित होगा। 'ब्रह्म' शब्द अप्राकृत तत्त्व का वाचक है। श्रीभगवान् सच्चिदानन्दघन हैं; उनके श्रीविग्रह से निस्सृत किरणराशि ब्रह्मज्योति कहलाती है। उसी ब्रह्मज्योति में सब कुछ स्थित है। मायाच्छन्न हो जाने पर उसे प्राकृत (भौतिक) कहा जाता है। इस प्राकृत आवरण को कृष्णभावनामृत से तत्काल हटाया जा सकता है। अतएव कृष्णभावना के लिए अर्पित हवि, ग्रहणकर्ता, अर्पणक्रिया, अर्पणकर्ता और यज्ञफल —ये सभी समवेत रूप में ब्रह्मतत्त्व हैं। मायाछन्न ब्रह्म ही जड़ प्रकृति कहलाता है और परब्रह्म की सेवा में नियोजित प्रकृति फिर दिव्यता को प्राप्त हो जाती है। अतएव कृष्णभावना के अनुशीलन से मायाच्छादित चेतना अपने ब्रह्मस्वरूप को प्राप्त कर लेती है। चित्त का कृष्णभावना में पूर्णरूप से तन्मय हो जाना समाधि है। इस भगवन्निष्ठ मति (बुद्धियोग) से युक्त होकर जो भी कर्म किया जाता है, वह 'यज्ञस्वरूप' है। ऐसे भगवद्भाव में अर्पणकर्ता, अर्पित हवि, अर्पण-क्रिया, होता ओर यज्ञफल अर्थात् अन्तिम लाभ—सभी कुछ परब्रह्म में एकत्व को प्राप्त हो जाता है। यही कृष्णभावना की विधि है।

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति।।२५।।

दैवम्=देवयजन में; **एव**=इस प्रकार; **अपरे**=अन्य; **यज्ञम्**=यज्ञ; **योगिनः**=योगी; **पर्युपासते**=पूर्ण रूप से उपासना करते हैं; **ब्रह्म**=परतत्त्व; **अग्नौ**=अग्नि में; **अपरे**=अन्य; **यज्ञम्**=यज्ञ को; **यज्ञेन**=यज्ञ से; **एव**=इस प्रकार; **उपजुह्वति**=अर्पित करते हैं।

अनुवाद

दूसरे योगी नाना यज्ञों के द्वारा देवताओं की भलीभाँति उपासना करते हैं, जबकि अन्य ज्ञानीजन परब्रह्मरूपी अग्नि में आहुति देते हैं।।२५।।

तात्पर्य

पूर्व वर्णन के अनुसार, कृष्णभावना में कर्तव्य का पालन करने वाला परमयोगी है। परन्तु ऐसे भी मनुष्य हैं जो देवोपासना के लिए यजन करते हैं और परमेश्वर श्रीकृष्ण के निराकार तत्त्व से निमित्त यज्ञ करने वाले भी हैं। अतः विविध श्रेणियों के